1967 के अरब–इजराइल युद्ध के कारण

प्रो0 सतीश चन्द्र पाण्डेय,
आचार्य,
रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग,
दी0द0उ0गोरखपुर विश्वविद्यालय,
गोरखपुर।

1956 के अरब–इजराइल युद्ध के बाद मध्य पूर्व में ब्रिटेन और फ्रांस के प्रभाव में कमी आयी और अमेरिका तथा सोवियत संघ के प्रभाव में वृद्धि हुई। अमेरिका इजराइल का समर्थक था तो सोवियत संघ अरब देशों का पक्षधर था। इजराइल से सभी अरब देशों की शत्रुता थी लेकिन अरब देशों में एकता का अभाव था। मिस्र और सऊदी अरब में यमन के गृह युद्ध को लेकर तनाव था। जार्डन और सीरिया एक दूसरे को संशय की दृष्टि से देखते थे। फरवरी 1966 में सीरिया में वामपन्थ समर्थक सरकार आयी जो इजराइल पर तत्काल आक्रमण करके उसे नष्ट कर देने के पक्ष में थी। धीरे–धीरे दोनों देशों के बीच तनाव बढ़ता गया और 14 जुलाई 1966 को इजराइली बमवर्षक विमानों ने जार्डन नदी पर निर्माणाधीन सीरिया के एक प्रतिष्ठान पर आक्रमण कर दिया। इस स्थिति में अरब जगत का नेतृत्वकर्त्ता मिस्र मूकदर्शक नहीं रह सकता था। मिस्र ने 4 नवम्बर 1966 को सीरिया के साथ एक प्रतिरक्षा सन्धि पर हस्ताक्षर किया और एक संयुक्त सैनिक कमान स्थापित की। 13 नवम्बर 1966 के दिन इजराइलियों ने जार्डन पर आक्रमण करके सामू (SAMU) नामक गाँव को नष्ट कर दिया जिसके वजह से जार्डन सीमा पर तनाव बढ़ गया। इस समय इजराइल की स्थिति ठीक नहीं थी। यहाँ मुद्रस्फीति की दर में काफी वृद्धि हो गयी थी जिसके वजह से इजराइल आर्थिक संकट से गुजर रहा था। इजराइली सरकार अरब देशों से युद्ध कर यहूदियों को एकजुट करना चाहती थी तथा उनका ध्यान आन्तरिक समस्याओं से हटाकर युद्ध में लगाना चाहती थी। 1967 के युद्ध के निम्नलिखित तत्कालीन कारण थे–

1. जार्डन, सीरिया और मिस्र द्वारा सन्धि करके युद्ध के लिए संयुक्त कमान बनाने से इजराइल सशंकित हो गया।
1. 1964 से 1967 के बीच के समय में फिलिस्तीनी मुक्ति संगठन के हमलों और इजराइल के जबावी हमलों के कारण बढ़ते हुए तनाव और कटुता का वातावरण।

2. नवम्बर 1966 में सीरिया में वामपंथी (साम्यवादी) सरकार का सत्ता में आना जो फिलिस्तीनी मुक्ति संगठन की समर्थक थी और इजराइल की सख्त विरोधी थी। वह इजराइल पर शीघ्र आक्रमण के पक्ष में थी।
3. मई 1967 में वामपंथी सीरिया की सरकार का तख्ता पलटने के उद्देश्य से सीमा पर इजराइल की सेनाओं का जमा होना जिसके विपरीत सीरिया की सहायता में मिस्र का प्रतिक्रिया व्यक्त करना और सिनाई क्षेत्र की तरफ अपनी सेनाओं को तैनात करना।
4. 1964 से जार्डन नदी के पानी को नेगेव रेगिस्तान की तरफ मोड़ने की इजराइल की योजना जिसके जववा में सीरिया द्वारा पानी की मुख्य धारा को अपनी तरफ मोड़ने की योजना बनाने से दोनों पक्षों के बीच तनाव उत्पन्न होना।
5. सिनाई क्षेत्र में मिस्र की सैनिक टुकड़ियों के तैनात हो जाने से संयुक्त राष्ट्र संघ की आपातकालीन सेनाओं का पीछे हटना और अकबा की खाड़ी को अवरूद्ध कर देने से इजराइली पक्ष की व्यापक प्रतिक्रिया।
6. इजराइल में व्याप्त आर्थिक संकट और मन्द आप्रवासन (Immigration) की दशा में इजराइल का युद्ध कर विजय प्राप्त करने पर बल दिये जाने से तनाव बढ़ना।